

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,  
JAMMU

२८१६  
No. क

Title कालीसोत्रम्

Author \_\_\_\_\_

Extent ३ पत्र Age \_\_\_\_\_

Subject सोत्र

काली स्तोत्रं

नं. १८१६

61/10

F-3-

complete

m/m

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो देव्यै नमः ॥ ॐ

कपाली काली के करवर कपाली

मवाती बानी जे विभव न बानी ब

सकरी ॥ विधाता माता ते सकल स

सकरी ॥ कवीली भवलीलीम





क

१

ऊटसिरमालांडरभरी॥५॥सुरंगीमाते  
मीसमकनकअंगीच्छबभनीगुला  
नारीसारीसरलसुतप्यारीसुखसनी  
क्रपाकीजैदीजैसमपसुधलीजैम  
मजनीसुरेसेवेदेवेतरतसुधलेवे

२

तमसुनी॥५॥उमारासाशिवज  
पतनासाछिनछिनासतीसीतागी  
तासुरनरअतीतागुणागुणा॥५॥अधे  
डीब्रह्मंडीपलकनकवेडीतमवणी  
तहीकंन्यायन्यापदरतनरणानि।

क

२

सदिना॥६॥समारूढं गूढं प्रगुण  
रूढं उत षरी॥धुराधारीष्पारी प्रसरगु  
णदारी उषसनी॥७॥सुरासेवादेवानि  
गमलहभीवालहतहः सनीज्ञानी  
ध्यानी त्रिभुवनबावानी बसतहः

२



द्विवीलीभवलीलीसखधनरसी॥  
लीसनसनी॥ समशानीकल्यानीस  
कलजगानीजसभरी॥ ५॥ तहीब्रह्मा  
विष्णुशिवसहिदिनीसोमगतहः त  
हीकर्ताहरतापवनजलस्यवीया

१४४

०क

१

३

तुमगण है ॥ तही वेदभ्यासे सवसु  
खविलासे मगण है ॥ १ ॥ तही भक्ति  
क्ति तव चरणतेरी लगत हा ॥ मृगानैनी  
प्रवे प्रगहरणतेरी सरण हः ॥  
शंकराचार्य विरचितं का